श्रीः

श्रीमते रामानुजाय नमः

श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः

श्री ऊत्तुक्काडु वेङ्कटकवि रचितम्

॥ श्री रङ्गनाथ पञ्चकम् ॥

This document has been prepared by

Sunder Kidāmbi

with the blessings of

श्री रङ्गरामानुज महादेशिकन्

His Holiness śrīmad āṇḍavan śrīraṅgam

श्रीः

श्रीमते रामानुजाय नमः

श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः

॥ श्री रङ्गनाथ पञ्चकम् ॥

स्वीयतर भासकर चन्द मणियुक्त फण मण्डित भुजङ्ग शयनम्
मेघवर वासक सुवर्णगिरि सौभग पराभवमनन्त रुचिरम्।
लीनकर छन्द भुवनत्रय मुदाकर शुचिमधिक भूषणकरम्
नौमि भगवन्त मुख मन्द हसनन्तमति सुन्दरमनन्त शयनम्॥ 1॥

रूपमव बोधमति नूतन मनोज्ञ मदनं भुवन मङ्गळकरम्
वारिधि सुधाकर सुताकर सुखातुर सुमाधुर सुशीलन पदम्।
भूत महदादयमलङ्कृत कळेबरमखण्ड करुणालय मुखम्
नौमि भगवन्त मुख मन्द हसनन्तमति सुन्दरमनन्त शयनम्॥ 2॥

राचर चराचर पराधिक दुराकृति मुरादि पटु भीकर तनुम्
नारद वरादि नुत नीरद निभाकर मनोरथ सुमाधुर पदम्।
नादयुत गीत परवेद निनदानघ सनातन जनाधिक वृतम्
नौमि भगवन्त मुख मन्द हसनन्तमति सुन्दरमनन्त शयनम्॥ 3॥

सिद्धसुर चारण सनन्द सनकादय मुनीन्द्र गण घोषणपरम्
नित्य रचनीय वचनीय रसनीय रमणीय कमनीयत परम्।
पद्मदळ भास मकरन्द परिहास निजभक्त भव मोचनकरम्
नौमि भगवन्त मुख मन्द हसनन्तमति सुन्दरमनन्त शयनम्॥ 4॥

हेम मकुटादि कटकाभरण कङ्कण समुज्ज्वल मनोहर तनुम्
गीत नटनादय कलावृत सुधामृत निरञ्जन सुमङ्गळकरम्।
भागवत राम चरितामल धुरीण वचनादि परिपूरितकरम्
नौमि भगवन्त मुख मन्द हसनन्तमति सुन्दरमनन्त शयनम्॥ 5॥

॥ श्री रङ्गनाथ पञ्चकं समाप्तम् ॥

sunder kidāmbi
prapatti dot com
sunder kidāmbi